मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

ISSN 0974-0066
(अंक-73, जुलाई-दिसम्बर, 2017)

संरक्षक
प्रो. राघवेन्द्र पी. तिवारी
कुलपति

प्रधान सम्पादक
प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा

सम्पादक
प्रो. निवेदिता मैत्रा
डॉ. पंकज चतुर्वेदी
डॉ. आशुतोष कुमार मिश्र

प्रबन्ध सम्पादक
डॉ. छविल कुमार मेहेर

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय
सागर (मध्यप्रदेश) - 470003
दूरभाष : (07582) 264455
ई-मेल : madhyabharti.2016@gmail.com

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

गाँधी और उत्तर-गाँधी सर्वोदयी-विमर्श 5
आभा नवनी

शिशुपालवध में चित्रित प्रकृति-चित्रण 27
पी. डी. सिंह

काव्य के निकष पर उत्तर राम 49
आशुतोष

भारतीय महिलाओं के राजनैतिक सशक्तीकरण में नेहरू की भूमिका 58
अनुपमा कौशिक

नव-उदारवादी समाज, मीडिया और स्त्री 70
आकांक्षा

संगीत चिकित्सा एवं तंत्रिकातंत्र विज्ञान 75
अवधेश प्रताप सिंह तोमर

ह्वाइटहेड का प्रक्रिया दर्शन 83
सुचेता शुक्ला

विट्गेन्स्टाइन के भाषा-खेल और धुरी निश्चितता का नीतिशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य 92
मंजेश कुमार

जैन दर्शन में आत्मा और उसका ज्ञातृत्त्व 97
सचिन्द्र जैन

'तिलहरी' एक नवीन प्रागैतिहासिक पुरास्थल 110
सुल्तान सलाहुद्दीन

पूर्व मध्यकालीन भारत की चंदेलवंशीय अर्थव्यवस्था 122
आर. पी. सिंह एवं विशाल विक्रम सिंह

समकालीन युवाओं में फैशन और व्यक्तित्व विकास 131
अनिता सिंह

साम्प्रदायिकता का बदलता स्वरूप और समकालीन कहानी 137
सुशील कुमार गर्ग

बेहतर प्रबंधन से बदलेगी कृषि की तस्वीर 144
केशव टेकाम एवं तुलसीराम दहायत

Scanned with CamScanner

भारतीय महिलाओं के राजनैतिक सशक्तीकरण में नेहरू की भूमिका

अनुपमा कौशिक

नेहरू परम्पराओं व घटनाओं का गहराई से व्यापक विश्लेषण करते थे तथा उन्होंने इतिहास के भारतीय राजनीति व समाज पर पड़ने वाले प्रभावों का मूल्यांकन भी किया। नेहरू की शक्ति उनके विचारों तथा किसी घटना का अध्ययन कर उसका मंथन करने, सुनने और व्यग्र कर देने वाले प्रश्नों में निहित थी। नेहरू ने भारत एवं विश्व की अधिकांश महिलाओं को आर्थिक, राजनीतिक और अन्य आधारों पर पीड़ित वर्ग के रूप में देखा। उन्होंने भारत को एक उन्नत राष्ट्र बनाने हेतु राष्ट्र की आधी जनसंख्या के मार्ग में आने वाले इन अवरोधों को दूर करते हुए उन्हें समान अवसर व अधिकार देने की बात कही। विश्व के कई स्थानों पर होने वाले विकास कार्यों के प्रति अपनी बढ़ती जागरूकता के कारण वे विभिन्न आधारों पर लैंगिक भेदभावों के प्रति मौन एवं निष्क्रिय नहीं रह सकते थे। नेहरू ने कहा कि पुरुष वर्ग द्वारा अपने अहं एवं स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण महिलाओं को औपचारिक राजनीतिक संस्थाओं से दूर रखा गया है। जिससे वे निर्णय निर्माण प्रक्रिया में भाग न ले पाने के कारण स्वयं के कल्याण एवं विकास के प्रयत्नों से दूर रही हैं। उनके अनुसार महिलाओं का पुरुषों के समकक्ष राजनीतिक शक्ति का प्रयोग करने के सन्दर्भ में समाज का झुकाव पुरुषों के पक्ष में जाता है। नेहरू ने सभी नागरिकों के राजनीति में भाग लेने को ही प्रजातांत्रिक प्रक्रिया का स्वरूप बताया। उनके अनुसार राजनीति में महिलाओं की समान व वास्तविक भागीदारी के अवसरों पर ही प्रजातंत्र की सफलता व प्रभावशीलता निर्भर करती है।[1] नेहरू ने महिलाओं पर रीति रिवाजों और परम्परागत कानूनों के द्वारा लगे सभी प्रतिबंधों और निर्योग्यताओं को दूर करने का प्रयास किया।[2] नेहरू के प्रयासों से भारत में महिलाओं की राजनीतिक स्थिति में सुधार हुआ। उन्होंने राजनीतिक निर्णय निर्माण प्रक्रिया में स्त्री पुरुष दोनों की भागीदारी को समान रूप से महत्त्वपूर्ण बताया।

नेहरू समाज में प्रचलित सभी प्रकार के अंधविश्वासों व महिला अधिकारों पर आरोपित प्रतिबंधों की विरोधी थी। वे महिलाओं को खामोशी के साथ घर की साज-सज्जा तक सीमित रखने के विरोधी थे। वे महिलाओं को बाह्य कार्यों के दायित्वों से भी सम्बद्ध रखना चाहते थे। महिलाओं का उत्पीड़न एवं उनके साथ किया जाने वाला अन्याय उन्हें सहनीय नहीं था।[3] नेहरू ने कहा कि किसी भी राष्ट्र की प्रगति वहाँ की महिलाओं की स्थिति पर निर्भर करती है। भारत का अपनी उच्च स्थिति से पतन का आंशिक कारण महिलाओं की स्थिति का पतन है।[4] नेहरू ने कहा कि माँ होने के कारण महिलायें भावी पीढ़ी की संरक्षक है। भारत शक्तिशाली, योग्य, और सभ्य नागरिकों से सम्पन्न तभी हो सकेगा जब मातायें अपने बच्चों में उपरोक्त गुणों का संचय करेंगी। इसलिए नेहरू ने विधान मण्डल के प्रत्येक भाग में महिला प्रतिनिधित्व पर बल दिया। उन्होंने

मध्य भारती-73, जुलाई-दिसम्बर, 2017, ISSN 0974-0066, *pp. 58-69*

Scanned with CamScanner